रात्रि क्लास 28-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?वरसा याद है?

ल0ना0 के चित्र को देख खुशी होती है?बच्चे जानते हैं हम यह बनने लियेही पढ़ते हैं। समझ भी सकते हैं। इन्होने कैसे राज्य पाया। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजधानीकैसे स्थापन हुई, कब हुई जान न सके।तो यह है एक आबजेक्ट। इनको देख खुशी जरूर होनी चाहिए।यह है हमारा एमआबजेक्ट।सिवाय बेहद के बाप के और कोई राजयोग सिखा न सके।मेहनत है।काम महाशत्रु है इनको जीतने से जगत जीत बनेंगे।यह जगत जीत है ना। दोनो को पवित्र गाया जाता है।वह दो कला कम हो जाता।क्योंकिदुनिया पुरानी हो जाती है।हम स्टुडन्ट्स को यह बनने का है तो खुशी होनी ना।घड़ी2 देखना चाहिए।बन्दर खाना चाहिए।हम ही इस डिनायस्टी के थे।फिर पुनर्जन्म लिया।हिस्ट्री रिपीट कैसे होती है वह भी एक्ट पर खुशी होनी चाहिए परन्तु माया यह खुशी आने नहीं देती है।खुशी रहे तो बाकीक्या चाहिए।यहां तुम बच्चे स्वतंत्र हो।तुमको कोई चिन्ता करने की कोई दरकार नहीं।जो बन्धन में होते हैंउनको इतनी खुशी नहीं होती।तुम बच्चों को तो कोई बन्धन नहीं है।यह तो (वेज) पाकेट के पड़ा रहे देखने लिये।भक्ति-मार्ग में बाबा पाकिट में रखते थे परन्तु यह पता थोड़ेही चाहम बनेंगे।अभी बच्चे समझते हैंआधा कल्प हम फिक्र से परहेज हो जावेंगे।इस समय कोई न कोई चिन्ता रहती है।तुमको तो चिन्ता से मुक्त कर देते हैं।तो अथाह खुशी होनी चाहिए ना।बाबा को तो बहुत ख्यालात चलानी पड़ती है।कई सेन्टर्स पर खिट-पिट रहती हैं तो ख्याल चलता है।फिर कहा जाता है ड्रामा।थोड़ा हिचकना होता है फिर ड्रामा पर आ जाते।जरा भी मुंझ न हो।= फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाये।कुछ कहा, कुछ सुना दुःख जरूर होता है।भल पदमपति हो कोई भी होदुःख जरूर देखनाही पड़ता है।घड़ी2 बाप याद दिलाते हैं बच्चे अभी तुम सभी दुःखधाम से उस पार जाते हो।यह भी अभी तुम संगम पर ही सुनते हो।हम छी छी दुनिया से नई दुनिया में जाते हैं।परन्तु माया रावण यह भी नहीं सहन कर सकती तो विघ्न डालती है।बच्चों को अन्दर में आना चाहिएअभी हम अमरपुरी में जाते हैं।हां जितना सर्विस करेंगेउतना ही ऊंच पद पावेंगे। बच्चे भी कोशिश करते हैंऊंच पद पाने की।कोशिश कर जितना हो सके ऊंच पद पाने की रेस करनी है।सतयुग कल्प-कल्पान्तर हमाराऊंच पद रहेगा।तुमको पिछाड़ी में बहुत सा0 होंगे।यह भी बाबा ने कह दिया है।फिर पछताने से कुछ कर न सकेंगे।ऐसे अंत समझो टाईम पड़ा है।अचानक मौत कैसे आ जाता है।एक को विचार ही नहीं कितने को दुःख होता है।एक को ही दुःखधाम।स्टुडन्ट लाईफ में जब कि एमआबजेक्ट पाने है, शिव बाबा पढ़ा रहे हैं, बड़ी खुशी रहनी चाहिए।बाप खुद कहते हैंमुझे याद करो।काम जीत जगत जीत बनो। फिर यह जगतजीत होगा ही नहीं।बाप आते ही ऐसे समय हैं जब कि पावन दुनिया स्थापन हो पतित दुनिया का विनाश होता है।कोई भी नहीं जानते यह ऐसा राजयोग सीख रहे हैं।तुम गुप्त हो।यही एक दो स्मृति दिलानी है।बाप को याद करना है।एक ही सद्गुरु द्वारा जीवनमुक्ति मिल जाती है।किसको थोड़ा भी यही समझाना है बाप पतित-पावन हैउनको याद करने से तुम सतोप्रधान बन जावेंगे।स्वर्ग में चले जावेंगे।बहुत सहज है मीठी2 बातें। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

बाप समझाते हैं माला का नम्बरवन दाना बनना है। तो जब ऐसे देवी गुणवान बनेंगे तब स्कालरशिप पा सकेंगे। कम स्कालरशिप नहीं है।विश्व का मालिक बनना होता है। बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं।बाकी और क्या चाहिए।रावण भी कम नहीं है।एकदम पट गिराये देती है।अच्छे अच्छे बच्चों को भी माया बड़ी तंग करती है।ड्रामा अनुसार ऐसा होता है।बच्चे सुधरते ही जावेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। इसलिये बाबा याद प्यार भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही देते हैं।बाप की बुद्धि तो सर्विसएबुल बच्चों तरफ ही चली जाती है। जो आज्ञाकारी बच्चे ही नहीं उनको क्या प्यार करेंगे। बाप तो जानते हैं ना कौन कौन अच्छे सर्विस एबुल बच्चे हैं। अच्छे सर्विस करने वाले हैं। *

82 84

* :- विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?35*